जलवायु परिवर्तन : दुनिया के सामने सबसे बड़ी चुनौती

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र

असोशिएट प्रोफ़ेसर, होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र, टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, मुंबई

प्रस्तावना

जलवायु परिवर्तन आज दुनिया के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। धरती का पर्यावरण बुरी तरह प्रभावित हो चुका है। हवा, पानी, मिट्टी, सागर, नदियाँ, तालाब, झीलें, सभी प्रदूषण की चपेट में हैं। जलवायु परिवर्तन के कुप्रभाव हमें जीवन में बीमारी, कुपोषण एवं असुरक्षा भाव के रूप में दिखायी दे रहे हैं। बाढ़, आग, तूफान, भूस्खलन, लोगों के मन पर गहरा असर डाल रहे हैं। वे अपेक्षाकृत सुरक्षित स्थानों की ओर विस्थापन कर रहे हैं। प्रभावित लोग भविष्य के प्रति डर, बेचैनी तथा विवशता की भावना से जूझ रहे हैं। वैज्ञानिक कहते हैं कि पर्यावरण में बदलाव से आने वाली पीढ़ी को स्वास्थ्य, चिकित्सा, शिक्षा, पोषण, आवास, जैसी तमाम दिक्कतों से गुजरना होगा। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के आकलन के अनुसार वर्ष 2050 तक प्राकृतिक आपदाओं तथा समुद्री जलस्तर बढ़ने से दुनिया के करीब 120 करोड़ लोग पलायन के लिए विवश हो सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट कहती है कि सदी के मध्य तक भारत में करीब 30 शहरों में गंभीर जलसंकट की स्थिति बन सकती है। भारत चूँकि एक प्रायदीप है तथा तीन तरफ से सागर से घिरा है। इसलिए जलवायु परिवर्तन का दुष्प्रभाव भारत पर कहीं ज्यादा होगा।

इस सजल सजीव वसुंधरा को बचाना ही होगा

जलवायु परिवर्तन क्या है?

मोटे तौर पर जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य तापमान और मौसम के पैटर्न में दीर्घकालिक बदलावों से है। ऐसे बदलाव प्राकृतिक हो सकते हैं, जो सूर्य की गतिविधि में बदलाव या बड़े ज्वालामुखी विस्फोटों के कारण हो सकते हैं। लेकिन 1800 के दशक से मानवीय गतिविधियों के चलते ही जलवायु परिवर्तन हो रहा है मुख्य रूप से कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन के जलने के कारण। जीवाश्म ईंधनों के जलने से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन होता है जो पृथ्वी के चारों ओर एक कम्बल की तरह कार्य करता है, जो सूर्य की गर्मी को रोक लेता है और तापमान बढ़ाता है। जलवायु परिवर्तन का कारण बनने वाली मुख्य ग्रीनहाउस गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन शामिल हैं। उदाहरण के लिए, वाहन चलाने के लिए पेट्रोल, डीजल, या तापविद्युत उत्पादन के लिए कोयले के उपयोग से ये गैसें निकलती हैं। भूमि को साफ करने और जंगलों को काटने से भी कार्बन डाइऑक्साइड निकलती है। कृषि, तेल और गैस का दहन, मीथेन उत्सर्जन के प्रमुख स्रोत हैं। ऊर्जा, उद्योग, परिवहन, भवन, कृषि और भूमि उपयोग, से ग्रीनहाउस गैसें पैदा होती हैं।

जलवायु वैज्ञानिकों का कहना है कि विगत 200 वर्षों में वैश्विक तापमान में लगभग सभी वृद्धि के लिए मनुष्य ही उत्तरदायी है। ऊपर बताई गई मानवीय गतिविधियों के कारण ग्रीनहाउस गैसें पैदा हो रही हैं, जो कम से कम पिछले दो हज़ार वर्षों में किसी भी समय की तुलना में दुनिया को तेज़ी से गर्म कर रही हैं। धरती की सतह का औसत तापमान सन् 1800 के बाद यानी औद्योगिक क्रांति से पहले, की तुलना में लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। यह पिछले 1,00,000 वर्षों में किसी भी समय की तुलना में सबसे अधिक गर्म है। सन् 2011-2020 तक का दशक रिकॉर्ड गर्म था जो सन् 1850 के बाद से किसी भी पिछले दशक की तुलना में अधिक गर्म रहा है। बहुत से लोग सोचते हैं कि जलवायु परिवर्तन का मुख्य अर्थ है गर्म तापमान। लेकिन तापमान में वृद्धि तो कहानी की शुरुआत मात्र है। चूँकि पृथ्वी एक प्रणाली है, जहाँ सब कुछ परस्पर जुड़ा हुआ है।

इसलिए एक क्षेत्र में होने वाला परिवर्तन अन्य सभी क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों को प्रभावित करता है।

एक अनुमान के मुताबिक सन् 2050 तक दुनिया के 170 से 240 करोड़ लोग पानी की कमी का सामना करेंगे। रसोई, बाथरूम, वॉशिंग मशीन, वगैरह से निकले पानी को उपचारित करके अगर शौचालयों में फ्लश करने के काम लाया जा सके तो पानी की करीब 20 फीसदी तक बचत हो सकती है। अगर हम ऐसा कर सकें तो 4 लोगों के परिवार में रोज 100 तक लीटर पानी बचा सकते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया जैसी मैदानों की बीमारियाँ पहाड़ों तक में पहुंच रही हैं। जंगलों की कटाई से पर्वतीय इलाकों में भी अब मैदानी भाग जैसी गर्मी देखने को मिल रही है। साल दर साल धरती का तापमान बढ़ रहा है। पिछले साल भारतीय भूभाग का औसत तापमान सामान्य से 0.65 डिग्री सेल्सियस ज्यादा दर्ज किया गया था। पहले वैज्ञानिकों का मानना था कि धरती का औसत तापमान शायद सदी के मध्य तक 1.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाए। लेकिन हालिया आंकड़े इस ओर इशारा कर रहे है कि शायद उस सीमा रेखा को वह पहले ही पार कर जाएगा।

जलवायु परिवर्तन सम्मेलन के मुद्दे

जलवायु परिवर्तन को लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्त्वावधान में सबसे पहला सम्मेलन ब्राजील के शहर रियो डि जेनेरियो में सन् 1992 में आयोजित हुआ था, तथा वर्ष 1994 में यह संधि लागू हुई। इसके बाद हर साल जलवायु सम्मेलन (Conference of the Parties, COP) का आयोजन होता रहा है। वर्ष 2021 में स्कॉटलैंड के शहर ग्लासगो में आयोजित जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP26) में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जलवायु परिवर्तन की चिंताओं तथा भारत की भूमिका को रेखांकित किया था। उन्होंने सुझाव दिया था कि जलवायु परिवर्तन के विषय को स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए जिससे इस बारे में शुरू से ही व्यापक समझ विकसित हो सके। हमारे देश में स्कूली पाठ्यक्रमों में इस बात पर बखूबी अमल हो रहा है।

पिछले कुछ सम्मेलनों में इस खतरे से निपटने के लिए कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्य निर्धारित किए गये हैं। पहला लक्ष्य है वर्ष 2050 तक शून्य उत्सर्जन स्तर को हासिल करना, जिससे कि इस सदी के अंत तक तापवृद्धि को 1.5 C बढ़ने तक ही रोका जा सके।

जलवायु सम्मेलन को संबोधित करते माननीय प्रधानमंत्री

इसके लिए जरूरी है कि कोयले के इस्तेमाल को तेजी से घटाया जाए, वनों का कटाव रोका जाए, अधिक से अधिक वृक्षारोपण हो, तथा यातायात के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर तेजी से बढ़ा जाए। दूसरा लक्ष्य है समुदायों, एवं प्राकृतिक आवासों को बचाना। इसके लिए अपेक्षित है कि पारिस्थितिकी तंत्रों की रक्षा की जाए, तथा उन्हें बहाल किया जाए। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचने के लिए सुरक्षा-तंत्र बनाया जाए, चेतावनी प्रणाली तैयार की जाए, तथा टिकाऊ आधारभूत अवसंरचना तथा कृषिप्रणाली का निर्माण किया जाए, जिससे कि जनधन तथा पर्यावासों को नुकसान से बचाया जा सके। तीसरा है उपरोक्त दोनों बड़े लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विकसित देश अपने वचनानुसार हर साल करीब 100 अरब डॉलर की धनराशि उपलब्ध करायें। तथा चौथा है कि दुनिया की सभी सरकारें, निजी क्षेत्र तथा नागरिक समाज के मध्य परस्पर सहयोग से इस कार्य में तेजी लायी जाए। यह आवश्यक हो जाता है कि सभी देशों द्वारा पेरिस समझौते का अक्षरशः पालन किया जाए।

ग्लोबल वॉर्मिंग – दिनों दिन गर्म होती धरती

धरती पर जीवाश्म ईंधन के जलने से कार्बन डाइऑक्साइड तथा दूसरी ग्रीनहाउस गैसें निकलती हैं। इन गैसों की सघन मौजूदगी के कारण धरती द्वारा निर्मुक्त सूर्य की अवशोषित गरमी वातावरण से बाहर नहीं जा पाती है। ये गैसें किसी कंबल जैसा काम करती हैं जो ऊष्मा को बाहर नहीं जाने देतीं। जिससे वातावरण का तापमान बढ़ता है। यह सामान्य अनुभव की बात है कि बादलों वाली रातें अपेक्षाकृत गर्म होती हैं। उसका कारण यह है कि दिन में धरती द्वारा सोखी गयी गरमी रात्रि में बादलों के कारण वातावरण से बाहर नहीं जा पाती। ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के अनेक स्रोत हैं। बिजलीघर इनमें पहले पायदान पर हैं। तापविद्युत में प्रयुक्त कोयला, वास्तव में ग्रीनहाउस का सबसे बड़ा स्रोत है। संलग्न सारिणी में विभिन्न स्रोत तथा उनका योगदान दिया गया है।

कुदरती आपदाओं, जैसे, बाढ़, सूखा, तूफान के चलते गरीब तथा कमजोर तबके के लोग सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। इनसे होने वाले नुकसान को वे झेल नहीं पाते, तथा दूसरी जगहों पर चले जाते हैं। बाढ़, सूखे या फिर चक्रवातों से प्रभावित होकर देश में बहुत बड़ी आबादी विस्थापन का शिकार होती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि आने वाले समय में कुदरती आपदायें बढ़ेंगी। भारत में हिमालयी राज्यों तथा तटीय इलाकों से अन्य स्थानों की ओर विस्थापन बढ़ रहा है।

सारिणी: ग्रीनहाउस गैसों के स्रोत तथा उनका योगदान

ग्रीनहाउस गैसों के स्रोत	प्रतिशत
बिजलीघर	21.3
उद्योग	16.8
वाहन एवं यातायात	14.0
कृषि एवं कृषि-उत्पाद	12.5
जीवाश्म ईंधन	11.3
आवासीय क्षेत्र	10.3
जैव अपशिष्ट (बायोमास) दहन	10.0
कूड़ा-कचरा दहन	3.8
कुल	**100.0**

गर्म होती धरती

आंकड़े बताते हैं कि धरती के वातावरण में कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा 50 प्रतिशत तक बढ़ी है। वैज्ञानिकों का मत है कि अगर हम जलवायु परिवर्तन के बुरे परिणामों से बचना चाहते हैं तो हमें अपने क्रिया-कलापों पर ध्यान देते हुए तापमान वृद्धि के कारकों को नियंत्रित करने के बारे में ठोस क़दम उठाने चाहिए। ऐसे उपाय अपनाने चाहिए जिससे भू-तापन की दर कम हो। वैज्ञानिकों का मानना है कि हमारी कोशिश होनी चाहिए कि ग्लोबल वार्मिंग के चलते वर्ष 2100 ई. तक धरती के तापमान में बढ़ोत्तरी 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखी जाए। उन्हें अंदेशा है कि यदि दुनिया के तमाम देशों ने मिलकर ठोस क़दम नहीं उठाये तो इस सदी के अंत तक धरती का तापमान 2 डिग्री सेल्सियस से अधिक बढ़ सकता है। आकलन कहता है कि यदि कुछ न किया गया तो फिर ग्लोबल वार्मिंग के चलते धरती का तापमान इस सदी के अंत तक 4 डिग्री सेल्सियस भी बढ़ सकता है। ध्रुवीय इलाकों की बर्फ पिघल जाएगी। समुद्र का जलस्तर बढ़ेगा। ध्रुवों पर बर्फ नहीं होगी तो ध्रुवीय प्राणी जैसे भालू कहाँ से बचेंगे? अगर वास्तव में ऐसा हुआ तो यह सचमुच भयावह होगा। तब दुनिया को भयानक गर्म थपेड़ों का सामना करना पड़ेगा। समुद्र के जल स्तर में बढ़ोत्तरी होने से लाखों लोग बेघरबार हो जाएंगे। अनेक प्राणियों तथा पेड़-पौधों की प्रजातियां हमेशा के लिए धरती से विलुप्त हो जाएंगी।

खतरे से बेखबर बर्फ पर खेलते ध्रुवीय भालू

कार्बन उत्सर्जन की रोकथाम

समय की जरूरत है कि वर्ष 2050 तक शून्य उत्सर्जन स्तर को हासिल किया जाए। इससे इस सदी के अंत तक 1.5 अंश सेल्शियस की तापवृद्धि के लक्ष्य को पाया जा सके। इसके लिए जरूरी होगा कि ग्रीन एनर्जी का प्रयोग किया जाए, कोयले के इस्तेमाल में कमी लायी जाए, वनों का कटाव रोका जाए, तथा इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर बढ़ा जाए। समय की मांग है कि कार्बन डाईआक्साइड (CO2) के उत्सर्जन में 1.4 गिगाटन की कटौती प्रतिवर्ष की दर से लागू हो। इस समय दुनिया भर में सालाना CO2 उत्सर्जन 36.6 गिगाटन है। ग्लोबल कार्बन बजट, जो कि 380 गिगाटन है, वह आगामी 2031 में खतम हो जाएगा। वक्त की मांग है कि हम ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में व्यापक कटौती करें। ग्लोबल फॉरेस्ट वॉच के अनुसार दुनिया भर में 2001 से अब तक करीब 23 लाख हेक्टेयर वृक्ष आवरण खत्म हो चुके हैं। आदर्श तौर पर देश के एक-तिहाई भूभाग पर वृक्ष होने चाहिए। लेकिन आंकड़े बताते हैं कि इस समय करीब 25 प्रतिशत भूभाग पर हरियाली है। सर्वेक्षण बताते है कि देश के वृक्ष आवरण में धीरे-धीरे ही सही, बढ़ोत्तरी हो रही है। ग्लोबल कमीशन आन इकोनॉमिक्स आफ वॉटर के

अनुसार सन् 2050 तक जंगलों की कटाई तथा जलवायु परिवर्तन के चलते भारत के जीडीपी को नुकसान होने की संभावना है। देश में करीब 25 करोड़ लोग अपनी जीविका के लिए परोक्ष या अपरोक्ष रूप से जंगलों/वनों पर आश्रित हैं। जंगल कम होने से तापमान बढ़ रहा है, मिट्टी की उर्वरता घट रही है, तथा खाद्यान्न उत्पादकता प्रभावित हो रही है। ग्लोबल वॉर्मिंग के चलते सन् 1900 से अब तक दुनिया के 20 प्रतिशत जलस्रोत सूख चुके हैं। हमारे देश के सतही जल का केवल 30 प्रतिशत हिस्सा ही मानव के उपयोग का है, शेष दूषित हो चुका है। जलजनित बीमारियों की वजह से भारत में हर साल 2 लाख लोगों की मौत होती है।

भारत का समग्र वैश्विक उत्सर्जन में योगदान कुल 8 प्रतिशत का है। देश में प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन 1.9 टन/वर्ष है। शहरों में यह खपत तेजी से बढ़ रही है। यदि हम ए.सी. का तापमान 24 डिग्री सेल्सियस रखें तो 20 प्रतिशत बिजली की बचत होगी जो कार्बन उत्सर्जन रोकने में मददगार होगी। भारत ने तो वास्तव में 1990 के बाद आर्थिक उदारीकरण के साथ भौतिक संसाधनों पर तेजी से काम शुरू किया है। उसे अपने 145 करोड़ लोगों को रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा जैसी बुनियादी चीजें मुहैया करानी है। इसलिए पर्यावरणीय चिंता के चलते वह जन कल्याण के मुद्दे पर एकदम से पीछे भी नहीं हट सकता। भारत ने वर्ष 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य हासिल करने का संकल्प व्यक्त किया है। ग्लोबल साउथ के देशों ने कुछ दशकों से विकास करना शुरू किया है। इसलिए उन्हें नयी प्रौद्योगिकी के साथ वित्तीय साधन उपलब्ध कराना अमीर देशों की जिम्मेदारी है जिससे ये देश नवीकरणीय तथा दूसरे वैकल्पिक स्रोतों के विकास पर काम कर सकें।

भविष्य की चेतावनी और बेहतरी का रास्ता

महान भौतिकीविद् प्रोफेसर स्टीफन हॉकिंग धरती पर जीवन तथा सभ्यता को लेकर सजग तथा चिंतित रहते थे। उन्होंने धरती पर इंसानी सभ्यता के भविष्य को लेकर महत्वपूर्ण बातें कही थीं। वे दुर्लभ बीमारी, मोटरन्यूरॉन डिजीस से ग्रस्त एक दिव्यांग थे। यद्यपि उनका जीवन ह्वीलचेअर तक सिमटकर रह गया था, लेकिन उनके शोध और चिंतन का विस्तार विराट ब्रह्माण्ड तक था। प्रो. स्टीफन हॉकिंग ने ब्लैकहोल तथा बिगबैंग थ्योरी में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। चौदह मार्च 2018 को 74 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। वर्ष 2016 में बी.बी.सी. के साक्षात्कार में उन्होंने चेताया था कि इंसान के धरती पर रहने की मियाद खत्म हो रही है। अब उसे अपने लिए दूसरी धरती खोज लेनी चाहिए। यह कार्य उसे अगले 100 वर्षों में कर लेना चाहिए।

प्रो. स्टीफन हॉकिंग

उनका मानना था कि जलवायु परिवर्तन, मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा है। उनका कहना था कि धरती की सेहत बुरी तरह बिगड़ चुकी है। यदि बहुत जल्दी इसे बचाने के कदम नहीं उठाए गये तो बाद में चलकर वह ऐसी स्थिति में पहुंच जाएगी कि हम चाह कर भी कुछ नहीं कर पाएंगे। उन्होंने तकनीकी प्रगति, विशेष करके कृत्रिम बुद्धि को लेकर आगाह किया था कि शायद यह मानव सभ्यता की अंतिम उपलब्धि साबित होगी। वैसे राष्ट्रों के बीच शत्रुता तथा द्वेष के कारण परमाणु या जैव युद्ध के जरिये सब कुछ नष्ट होने का खतरा तो हमेशा रहेगा।

देश की आबोहवा लगातार खराब हो रही है। वर्ष 2024 में दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित नगरों में 13 भारत के थे। यह बेहद चिंताजनक है। वायु प्रदूषण से लोगों की जीवन प्रत्याशा कम हो रही है। लोग बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं। जहरीली हवा से देश को हर साल 95 अरब डॉलर का नुकसान होता है। दूषित हवा से हर भारतीय की औसत उम्र करीब 5 साल कम हो रही है। देश में हर साल 21 लाख लोग वायु प्रदूषण की वजह से काल कवलित हो जाते हैं। ऐसा अनुमान है कि सन 2030 तक देश के 67 करोड़ लोग उच्च वायु प्रदूषित इलाकों के संपर्क में रहेंगे। यह समस्या इंसान की बनायी हुई है। उसका निराकरण भी हमारे पास है। अगर हम कुछ बातों को अपनी आदत में शामिल कर लें तो इससे बहुत फर्क पड़ेगा। हम बिजली की बचत करें, अपने वाहनों की

नियमित सर्विस कराते रहें, कचरे को न जलाएँ, कृषि अवशेष (पराली) न जलाएँ, ईंट भट्ठों से होने वाले प्रदूषण को नियंत्रित रखें, तो इन उपायों से हम वायु प्रदूषण को 30 फीसदी तक कम कर सकते हैं। देश के खाद्यान्न का करीब 20% बर्बाद हो जाता है। यह ब्रिटेन की सालाना खाद्य जरूरतों के बराबर है। हमें खाद्यान्नों की बरबादी को रोकना होगा। खेती में श्रीअन्न यानी मोटे अनाजों को बढ़ावा देना होगा। इससे बारानी खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। सिंचाई में पानी की खपत कम होगी। सबसे ज्यादा पानी कृषि सिंचाई में लगता है। साथ ही मोटे अनाजों से हमें पौष्टिक अन्न मिलेगा जो स्वास्थ्य के लिए बेहतर है।

पर्यावरणीय बदलाव तथा खेती के तरीकों से खाद्य पदार्थों की पौष्टिकता कम हो गयी है। हाल के शोध में पाया गया है कि तमाम सब्जियों में गुणवत्ता भी कम हो चुकी ही है। कृषि में व्यापक बदलाव की आवश्यकता है। परंपरागत ढंग से खेती में लागत मूल्य ज्यादा है, उत्पादकता कम होती है। हमारे देश में प्रति हेक्टेयर अन्न उत्पादन दुनिया के अन्य देशों की तुलना में कम है। हमें वैज्ञानिक तरीके से खेती को बढ़ावा देना होगा। पर्यावरण बचाने के लिए हमें अपने घरों की छतों, बालकनी में गमले में पौधे लगाना चाहिए। इससे घर का वातावरण शुद्ध होगा। नलों से पानी का रिसाव रोकें। घरों, दफ्तरों, मॉल, होटलों, तथा अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में वातानुकूलन (ए.सी.) को 24 डिग्री सेल्सियस पर रखें। तापमान कम रखने से बिजली की खपत ज्यादा होती है। एक अंश सेल्सियस तापमान अधिक रखने से 6% बिजली बचती है। ट्रेनों में भी वातानुकूलित डिब्बों में तापमान 24 सेल्सियस रखने की जरूरत है। अभी अमूमन यह 20-21 सेल्सियस रहता है।

निष्कर्ष

भारत की सनातन संस्कृति में प्रकृति एवं पर्यावरण के साथ समरसता से जीने की बात शास्त्रों में बारंबार कही गयी है। शास्त्र कहते हैं कि इस सृष्टि का निर्माण पंचमहाभूतों से हुआ है। ये पांच तत्व हैं; जल, वायु, मिट्टी, अग्नि तथा आकाश। सृष्टि में सभी जड़ एवं चेतन इन्हीं पंचमहाभूतों से निर्मित हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में लिखा है-

क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित यह अधम सरीरा ॥

वेदों में अग्नि, वायु, जल, की बारंबार स्तुति की गयी है। इनके देवताओं की प्रार्थना की गयी है। ऋग्वेद, दुनिया का प्राचीनतम ग्रंथ कहा जाता है। इसमें 1028 सूक्त हैं, तथा कुल 10552 मंत्र हैं। ऋग्वेद संहिता के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त में अग्नि देव की स्तुति की गयी है। यथा–

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।

हम अग्नि देवता की स्तुति करते हैं जो यज्ञ के पुरोहित हैं, देवताओं के पुजारी हैं और सबसे कीमती रत्नों के दाता हैं।

सृष्टि के मूल में प्रकृति है। हमें अग्नि, वायु, जल से जीवन मिलता है, इसलिए उनके प्रति आदर और कृतज्ञता प्रकट की गयी है, और शास्त्रों में कामना की गयी है कि ये शक्तियाँ मानव के अनुकूल हों, हितकारी हों, कल्याणकारी हों। यजुर्वेद के शांतिपाठ में स्तुति की गयी है कि तीनों भुवन में, जल में, थल में, अन्तरिक्ष में, अग्नि में, पवन में, औषधि में, वनस्पति में, वन-उपवन में, प्राणिमात्र के तन, मन, और इस जगत के कण-कण में, शांति हो, समरसता हो। यथा-

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए हमें प्रकृति के साहचर्य में जाना होगा, जैसा कि पुराने समय में आरण्यक संस्कृति में था। उस समय मनुष्य का प्रकृति के साथ तादात्म्य था। हमें प्रकृति एवं पर्यावरण के साथ समरसता के साथ जीना सीखना होगा। ऊर्जा के लिए दुनिया को नवीकरणीय स्रोत खोजने तथा विकसित करने होंगे। जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करनी होगी। हमारे छोटे-छोटे प्रयास जलवायु परिवर्तन को रोकने में बहुद मददगार होंगे। छोटी दूरियों के लिए साइकिल का इस्तेमाल किया जा सकता है। यातायात के लिए सार्वजनिक साधनों पर निर्भरता बढ़ायी जाए। बिजली प्रयोग किफायत से किया जाए। पर्यावरण को बचाने का एक मंत्र है तीन आर (3R), यानी रिड्यूस (Reduce), रीयूज़ (Reuse), एवं रीसाइकिल (Recycle)। साधनों एवं वस्तुओं का इस्तेमाल कम किया जाए। बार-बार इस्तेमाल किया जाए। इस्तेमाल के बाद फिर से उपयोगी चीजें बनायी जाएँ। इससे धरती के पर्यावरण पर बोझ कम होगा। इसमें सभी की भागीदारी जरूरी है। सवाल आखिर इस धरती को बचाने का है।